ज्ञान योग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

ज्ञान मनुष्य जीवन का सार है। ज्ञान के बिना हमारा जीवन एक पल भी आगे नहीं बढ़ सकता। व्यावहारिक जीवन में हर विषय का ज्ञान होना चाहिए। गाड़ी चलाने वाले को यदि चलाने का ज्ञान नहीं है तो वह दुर्घटना घटित कर देगा। घर, परिवार, समाज, शासन और देश को चलाने के लिए भी ज्ञान होना चाहिए। यदि ज्ञान में कमी है तो परिवार, समाज, राष्ट्र टूट जाता है। ज्ञान चाहे भौतिकता से संबंधित हो या आध्यात्मिकता से दोनों में ज्ञान का महत्व है। भौतिक ज्ञान व्यवहार का ज्ञान है। जन्म से लेकर मृत्यु तक विद्यालयों में जो ज्ञान हम प्राप्त करते हैं, वह ज्ञान आध्यात्मिकता को प्राप्त कराने में सीढ़ी का काम करता है। आध्यात्मिक ज्ञान आत्म ज्ञान से संबंधित है।

आत्मा के विषय में जानना उतना ही जरूरी है, जितना सांसारिक विषयों को जानना। आत्मा का लक्ष्य है मोक्ष प्राप्त करना। मोक्ष सर्वोच्च ज्ञान है। चेतना की चरम परिणति मोक्ष है। संसार के सभी विषयों में परिवर्तन होता रहता है, किन्तु आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। यह एकरूप, एकरस वाला है। आत्मा कभी ज्ञान में और कभी दर्शन में बदल जाती है। ज्ञान ही आत्मा है और आत्मा ही ज्ञान है। गीता में कहा गया है कि– **ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः** अर्थात् बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं। ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है। कोई कार्य करने से पहले उसका ज्ञान होना आवश्यक है। जीवन के जितने क्षेत्र हैं उन सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित विषयों का ज्ञान होना चाहिए। जीवन जीने के ज्ञान को सद्ज्ञान कहा जाता है। कबीरदासजी ने कहा है–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय,
ढ़ाइ अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।

पढना–लिखना शिक्षा सदाचार से जो ज्ञान होता है वह आत्म ज्ञान में सहायक है। सद्ज्ञान ईश्वर की कृपा से होता है। इस संसार में सभी प्राणी सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। फिर भी दुःख का सामना सबको करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि पूर्वजन्म में कुछ ऐसे कर्म किये होते हैं, जिनके फल के रूप में सुख दुःख प्राप्त होता रहता है। आत्मा ही सद्ज्ञान है। उसी का ज्ञान सबसे बड़ा सुख है।

अज्ञानता को दुःख का सबसे बड़ा कारण माना गया है। मिथ्यादृष्टि ही अज्ञान है। अहंकार का कारण अज्ञान है। मैं ही सब कुछ करता हूं, यह भावना अहंकार है। किसी कार्य को पूरा होने में अनेक कारण होते हैं– निमित्त कारण, उपादान कारण, संयोग कारण आदि। मनुष्य अज्ञान के कारण अपने को ही कर्त्ता मानने लगता है। संसार ईश्वर के द्वारा संचालित है। कर्त्ता भाव हटने पर सम्यक् ज्ञान होता है। मोह वह वटवृक्ष है जिसकी अनन्त शाखाएं हैं। इन शाखाओं पर अज्ञान का फल लगा हुआ है। मानव उसे यथार्थ समझकर उसको प्राप्त करना चाहता है, किन्तु उसे फल की प्राप्ति नहीं होती। अंत में उसे दुःख ही प्राप्त होता है। कर्त्तापन हटने से न कभी दुःख होता है, न पश्चाताप। शरीर भी अपना नहीं है। शरीर और आत्मा दोनों भिन्न–भिन्न हैं, ऐसा विश्वास करना चाहिए। अच्छा जीवन जीने के लिए मैं और मेरा का भाव त्यागना चाहिए और अज्ञान रूप भाव को छोड़ना चाहिए।

हम जो कुछ भी देखते हैं वह बाहर का सच है। बाहर के सच का ज्ञान पंचेन्द्रियों के द्वारा होता है। इन्द्रियां बाह्य वस्तुओं का ज्ञान कराती हैं। इसके अतिरिक्त अंदर का भी सच है। वह सत्य आत्मकेंद्रित है। वही वास्तविक सत्य है। इन्द्रियों के द्वारा देखा हुआ सत्य पूर्ण सत्य नहीं होता। इसी कारण हमें संशय, भ्रम, विभ्रम इत्यादि हुआ करते हैं। एक ही वस्तु में भिन्न–भिन्न प्रकार का ज्ञान कभी–कभी हो जाता है। हिरण को गर्मी के दिनों में चमचमाती हुई रेत में पानी का भ्रम हो जाता है और इसी पानी की खोज में वह दौड़ता–दौड़ता मर जाता है। पानी की प्राप्ति उसे नहीं होती। इसी को मृग मरीचिका कहते हैं। यह संसार भी ऐसा ही है। मानव इस संसार में दौड़ता रहता हैं, किन्तु उसे शांति नहीं प्राप्त होती। कोई इस संसार को सत्य कहता है, कोई असत्य कहता है और कोई सत्य और असत्य का मिथुनीकरण कर देता है। एक ही वस्तु के विषय में लोगों की भिन्न–भिन्न धारणाएं हो जाती हैं, जिससे

सत्य का स्वरूप भी बदल जाता है। इस संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं उनके स्वरूप को निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। यह संसार संबंधों का संसार है।

ज्ञान ज्ञानयोग तब कहलाता है जब अंतःकरण का ज्ञान नष्ट हो जाता है। बाह्य जगत् का अंधकार सूर्य के प्रकाश से दूर हो जाता है, किन्तु अंतःकरण का अज्ञान रूपी अंधकार इतना सघन है कि करोड़ों सूर्य का प्रकाश भी उसे प्रकाशित नहीं कर सकता। उसे प्रकाशित करने के लिए ज्ञानरूपी दीपक की आवश्यकता होती है। जब अंतःकरण में ज्ञानरूपी दीपक प्रकाशित होता है तो अंतःकरण का ज्ञान स्वतः ही दूर हो जाता है। कबीरदासजी ने लिखा है– **सबै अंधियारा मिट गया, जब दीपक देखा माहि** अर्थात् जब अपने अन्दर ज्ञानरूपी दीपक प्रकाशित हो जाता है तो सभी प्रकार का संशय विपर्यय मन से दूर हो जाता है। ज्ञानरूपी दीपक का प्रकाश शास्त्रों के माध्यम से अथवा गुरु के सान्निध्य में प्राप्त होता है। गुरु जीवन में अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। गुरु प्रज्ञा के नेत्र को उद्घाटित कर देता है, जिससे आत्मज्ञान होता है।